परीक्षाओं में स्थिर रहना (2 तीमुथियुस 1)

''इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा'' (2 तीमुथियुस 1:8)।

स्थिर रहना! पौलुस ने लिखा कि मसीही व्यज़्ति सताव के समय मसीह के पीछे चलते हुए जेल हो जाने पर या मौत का सामना होने पर भी विश्वास में स्थिर रह सकता है। सुसमाचार के एक प्रचारक और तीमुथियुस के कठिनाई का सामना करने की सज़्भावना से (1:8; 2:3; 3:12) विशेषकर रोम आने पर पौलुस (4:9, 21) 2 तीमुथियुस में अपने कष्ट के बारे में बताते हुए भावुक हो गया।

अध्याय 1 में पौलुस ने उन विपज़ियों पर चिंता जताई जो तीमुथियुस पर भविष्य में आने वाली थीं। यदि तीमुथियुस अपनी मां और नानी द्वारा दिए गए विश्वास में बना न रहता (1:5), पौलुस द्वारा मिले दान को व्यवहार में न लाता (1:6) और पौलुस और मसीह के द्वारा दी गई खरी बातों को थामे न रखता (1:13), तो उसकी निर्बलता के कारण उस पर परीक्षाएं आ सकती थीं (1:7), जिससे सुसमाचार और पौलुस की बदनामी होती (1:8) और दूसरों की तरह वह भी पौलुस को छोड़ देता।

इस सज़्भावना से निपटने के लिए, पौलुस ने तीमुथियुस से स्थिर बने रहने की बिनती की। एक प्रेरित होने के नाते ईश्वरीय अधिकार से उसने अपनी नियुज़्ति के आधार पर (1:1, 2), तीमुथियुस के साथ अपने अनुभवों (1:3-7), अपनी गवाही और आज्ञा (1:8-14), और विश्वास से फिर जाने और विश्वासी रहने के बहुत से उदाहरणों (1:1-18) के आधार पर बिनती की।

पाठ 1: स्थिर रहने की ईश्वरीय प्रेरणा (1:1, 2)

पौलुस ने 2 तीमुथियुस का आरज़्भ सुसमाचार प्रचारक के स्थिर रहने की कुछ प्रेरणा देते हुए किया।

परमेश्वर की योजना

स्थिर रहने की पौलुस की बिनती का आधार इसका परमेश्वर की योजना के अनुसार होना था। पौलुस ''प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित''[1] (1:1ख) था। पौलुस के लिए परमेश्वर की योजना उसके जन्म से पहले ही थी (गलतियों 1:15, 16)। परमेश्वर जानता था कि उस काम को जो परमेश्वर के मन में था करने के लिए पौलुस की प्रारज़्भिक और बाद की शिक्षा ज़्या होनी थी। अपनी पत्रियां लिखते समय पौलुस को इस बात की समझ थी कि जब हम अपने जीवन परमेश्वर को दे देते हैं तो उसका प्रबन्ध किस प्रकार हमारे जीवन में कार्य करता है।[2]

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

पौलुस के लिए परमेश्वर की योजना में परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं भी थीं। वह उस ''प्रतिज्ञा के अनुसार जो यीशु मसीह में है'' (1:1क) एक प्रेरित था। जीवन की इस प्रतिज्ञा से स्थिरता होनी आवश्यक है, ज़्योंकि इससे धार्मिकता का जीवन अर्थात ''जीवन का नयापन'' मिलता है (रोमियों 5:18; 6:4; 2 कुरिन्थियों 5:17)। यह हमारी देह में दिखाया जाता है और हमें भज़्ति की ओर ले जाता है। मसीह के द्वारा हम उस जीवन की प्रतिज्ञा पाकर जो अब है और आने वाला है, भरपूरी का जीवन जी सकते हैं (1 तीमुथियुस 4:8)। हमें पुनरुत्थान (यूहन्ना 5:29) और सर्वदा जीवित रहने (2 तीमुथियुस 1:10) की आशा मिली है, ज़्योंकि परमेश्वर की योजना तथा हमारे भविष्य दोनों में ही जीवन *अनन्तकाल* तक रहने वाला है (तीतुस 1:1, 2; 3:4-7, विशेषतया आयत 7)। *कितना अद्‌भुत जीवन है!* पौलुस द्वारा अपने जीवन के उतार को महसूस करते हुए, यह प्रतिज्ञा हर रोज उसके चेहरे पर नई चमक लाती होगी!

मसीही व्यज़्ति को मिलने वाली प्रतिज्ञाओं में मृत्यु के बाद के जीवन से सज़्बन्धित अधिक हैं। पौलुस के ''प्रिय पुत्र''[3] (1:2) के रूप में तीमुथियुस को परमेश्वर और मसीह के द्वारा *अब सज़्भव* बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं स्थिर रहने का एक और कारण हैं। ध्यान दें कि किस प्रकार परमेश्वर का समृद्ध अनुग्रह और भलाई हमारे लिए उंडेले जाते हैं। (नीचे दिया गया चार्ट देखें।)

ज़्या दिया गया है?	ज़्या मिलता है?
अनुग्रह (1 तीमु. 1:14; रोमि. 5:15; 2 कुरिं. 9:8-11; 2 तीमु. 2:1)	**साहस**
दया (भ.सं. 86:15; 145:8, 9; लू. 1:78, 79; इफि. 2:4-6; 1 तीमु. 1:13)	**सुधार**
शांति (2 थिस्स. 3:16; 1 पत. 1:2; फलि. 4:4-7)	**सांत्वना**

कौन देता है?

परमेश्वर, पिता (मत्ती 6:9; गला. 4:6, 7)	चाहता है कि हम में हो	निकटता व चिंता
मसीह यीशु हमारा प्रभु (प्रेरितों 2:36; यू. 1:40, 41; 16:23, 24; मत्ती 1:21; 1 यू. 4:14; प्रका. 1:5; लू. 6:46; कुलु. 3:17; प्रेरितों 17:24)	चाहता है कि हम में हो	भरोसा, धोया जाना, पवित्रताई

पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस परमेश्वर की योजना और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (भूत, भविष्य और वर्तमान) के कारण स्थिर रहने की सकारात्मकता के बारे में जान ले।

पाठ 2: स्थिर रहने के उदाहरण (1:3-7)

पौलुस ने निजी सम्बन्धों, पारिवारिक सम्बन्ध और स्थिर रहने की प्रोत्साहित करने वाली कहानियों की एक भावनात्मक समीक्षा शामिल की। इसे लिखते समय पौलुस का मन यादों से रोमांचित हो गया था! *पौलुस ने तीमुथियुस को वर्तमान में स्थिर रहने की चुनौती देने के लिए बीती बातों की समीक्षा की!*

जो हमारे पहले गया है (आयतें 3-5)

पौलुस प्रभु के विश्वासी लोगों की विरासत के लिए आभारी था। उसने तीमुथियुस को (और हमें) अपने ''पूर्वजों'' के विश्वास और उनकी आत्मिक सेवा का स्मरण दिलाया (1:3; गलतियों 1:14; फिलिप्पियों 3:4-6; प्रेरितों 24:14-16)। पौलुस अपने ''प्रिय पुत्र'' के मौजूदा विचार के लिए तीमुथियुस का भी आभारी था। इस आभार को पौलुस ने कम से कम पांच तरह से व्यक्त किया। पहली बात तो यह कि इसके कारण वह लगातार प्रार्थना करने लगा था: ''... मैं ... अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूं।''[4]

दूसरा, पौलुस के मन में तीमुथियुस को देखने की बड़ी ''लालसा'' थी (1:4)। किसी प्रिय से बिछुड़ने पर तन्हाई का दर्द किसी को चूर-चूर कर सकता है। मसीह और कर्ज़व्य के प्रति पौलुस की निष्ठा ऐसे आवेगों से ऊपर थी, परन्तु उसका बड़ा दिल निश्चित तौर पर अपने प्रिय मित्र से मिलने की तड़प महसूस करता था।

तीसरा क्षण, पौलुस ने ऐसे पल का पूर्वानुमान लगाया जब वह ''आनन्द से भर''[5] सकता था। पौलुस के पास इस पत्र की बातों के लिए सुखद आसार थे। पूर्वानुमान से आम तौर पर लगे रहकर और कोशिश करते हुए उस आनन्दपूर्वक क्षण के वास्तविकता बनने तक दृढ़ होने में सहायता मिलती है।

चौथी, और मन को सबसे अधिक छू लेने वाली बात यह है कि, पौलुस ने तीमुथियुस

के आंसुओं को याद किया। बिना आंसुओं वाला सुसमाचार प्रचारक या तो मन से खाली है या वह अपनी सेवा के प्रति गंभीर नहीं है। कई लोगों की तरह (यूहन्ना 11:35; इब्रानियों 5:7) आंसू पौलुस के लिए नई बात नहीं थी (फिलिप्पियों 3:18; प्रेरितों 20:19, 31; 2 कुरिन्थियों 2:4)। रोनल्ड वार्ड का कहना था,

> सशक्त बौद्धिक क्षमता वाले प्रचारक ने, भावनात्मक स्नेह को साथ मिलाकर उसे और बढ़ा लिया है। प्रतिभाशाली नीरस व्यक्ति भीड़ को प्रभावित नहीं कर पाता; आवेग में उन्हें कुछ ऐसा नहीं मिलता जो उनसे छीना जा सके; जोशपूर्ण प्रतिभा उन्हें सिखाती है, प्रभावित करती है, परमेश्वर की सच्चाई से भरती है। तीमुथियुस को शीघ्र ही याद करवाया जाना था कि वह अपने अन्दर परमेश्वर के वरदान को चमकाए (1:6)। ज़्या एक उत्साहहीन व्यक्ति किसी चीज़ को चमका सकता है? प्रचार में भावुकता के महत्व से बिल्कुल अलग, तीमुथियुस के आंसुओं के प्रति इस प्रेरित का व्यवहार सच्चे मसीही के व्यवहार का प्रगटावा है। ... लोगों के सामने सच्चे मन से रोना कोई शर्म की बात नहीं है, इससे दस्त की दवा की तरह बहुत ही जल्द असर हो सकता है। इससे विश्वास की गहराई या प्रेम की गहराई का पता चल सकता है। इसमें मेल के बन्धनों और सहानुभूति की वास्तविकता सामने आ सकती है ... आंसुओं का ध्यान करके ही वह कह पाया, मैं ... *रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूं*।[6]

पौलुस के आभार का पांचवां जवाब तीन पीढ़ियों अर्थात लोईस, यूनीके और तीमुथियुस के "निष्कपट विश्वास"[7] को याद रखना था (1:5)।[8] बाइबल कई तरह के विश्वास की बात करती है, पर "*निष्कपट* विश्वास" की बात ही कुछ अलग है।

निष्कपटता से हो सकता है कि किसी की आस्था की गहराई का पता न चले, परन्तु इससे इसकी पवित्रता और ईमानदारी का निश्चित रूप से पता चलता है। बाइबल में तीन पीढ़ियों के विश्वास में रहने की बात बहुत कम मिलती है (देखिए मज़ी 8:11; इब्रानियों 11:8, 9, 17, 21)। विश्वास परमेश्वर में आस्था रखने से कहीं अधिक है ज़्योंकि इसमें आज्ञा मानना ज़ी शामिल है। मसीह में बपतिस्मा लेने के लिए हमारा विश्वास हमारे मन परिवर्तन को सुनिश्चित करता है (देखिए प्रेरितों 16:1-3; 4:4; 18:8; इब्रानियों 5:8, 9)।

यह कहते हुए कि, "मुझे निश्चय हुआ है,[9] कि तुझ में भी है" पौलुस इन तीन पीढ़ियों में विशेष भरोसा जताता है। जब हमें दूसरों पर भरोसा होता है, तो हम उन्हें देखना चाहते हैं और उनके साथ काम करने में आनन्दित होते हैं।

जो कुछ हमें सौंपा गया है (आयतें 6, 7)

स्थिर रहने को न केवल उसी के द्वारा प्रोत्साहित किया जा सकता है जो हमारे आगे गया हो बल्कि उससे भी किया जा सकता है जो हमें सौंपा गया है। तीमुथियुस को दिए गए परमेश्वर के दान के कारण उसका स्थिर रहना आवश्यक था (1:6)। पौलुस ने तीमुथियुस से आश्चर्यकर्म

के उस दान को ''चमका'' देने की इच्छा की जो उसे पौलुस के हाथ रखने से दिया गया था। पौलुस ने यह नहीं कहा कि ''... उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला *था*'' बल्कि यह कहा कि ''... उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला *है।*''

पौलुस को भय था कि तीमुथियुस कुछ जोश और सामर्थ खो न दे, जिससे उसे मिले वरदान का सही इस्तेमाल नहीं हो पाएगा (1 तीमुथियुस 4:14)। तीमुथियुस के लिए ''नीरसता के समय'' के लिए कई बातों का योगदान रहा होगा। (1) वह शारीरिक तौर पर कुछ कमज़ोर था (1 तीमुथियुस 5:23)। (2) दबाव में वह झुक सकता था। (1 कुरिन्थियों 16:10; 2 तीमुथियुस 1:7), जैसे पौलुस भी एक बार झुका था (प्रेरितों 18:9, 10)। (3) दबावपूर्ण परिस्थितियों में तीमुथियुस की जवानी उसके लिए खतरा बन सकती थी (1 तीमुथियुस 4:12; 2 तीमुथियुस 2:22)। (4) इफिसुस में रहने वाले झूठे शिक्षक और दंगा फसाद करने वाले लोग उससे निराश करके इस जवान को पीछे धकेल सकते थे (देखिए 1 तीमुथियुस 1:3-7, 19, 20; 4:6, 7; 6:3-10; 2 तीमुथियुस 2:14-19, 23)। (5) भाइयों को सरकार से खतरा था, और मसीह के लिए दृढ़ होकर आगे बढ़ना आसान नहीं था (देखिए 2 तीमुथियुस 1:8; 2:3-5; 4:4, 5)।

इसलिए परमेश्वर की ओर से तीमुथियुस को दिए गए वरदान को चमकाते रहना आवश्यक था ताकि उसकी लौ फीकी न पड़े। इससे हमें यह सीख लेनी चाहिए कि परमेश्वर की ओर से दिए गए तोड़े को मनुष्य की इच्छा के आगे झुक कर दबाया भी जा सकता है और उसमें बने रहकर उसे चमकाया भी जा सकता है (देखिए रोमियों 12:1)।

तीमुथियुस को यह भी पता होना आवश्यक था कि जो कुछ परमेश्वर ने अपने बच्चों को दिया है वह स्थिर रहने की एक कुंजी है (1:7)। पौलुस ने हमें याद दिलाया कि परमेश्वर ने हमें ''भय'' का नहीं बल्कि

सामर्थ[10]	जिससे हमें मिलती है	**शक्ति** (2 तीमु. 3:8)
प्रेम	जिससे हमें मिलती है	**सज़्भाल** (1 कुरिं. 13:1-8क)
संयम[11]	जिससे हमें मिलता है	**अनुशासन** (1 कुरिं. 9:27)

का आत्मा दिया है

ये गुण भय पर विजय पा लेंगे (देखिए इब्रानियों 13:5, 6; 1 यूहन्ना 4:18; दानिय्येल 3:15-30, विशेषतया 16-18 पद)। तीमुथियुस के लिए यह समझना आवश्यक था कि परमेश्वर हमें ''सामर्थ'' का आत्मा देता है।

हैंड्रिज़्सन ने पौलुस के ज़ोर देने को इन शज़्दों में संक्षिप्त किया:

> यदि कोई व्यज़्ति परमेश्वर की क्षमता और सर्वदा सहायता करने के लिए तैयार होने पर *भरोसा* रखने के बजाय शैतान की सताने वाली सामर्थ से *भय खाता* है, तो उसने अपना *मानसिक संतुलन* खो दिया है। निश्चय ही, तीमुथियुस ने अपना संतुलन नहीं खोया था! तो फिर उसे सच्चाई को *पकड़े* रखने दें। *इससे दूसरों को देकर* इसे *पकड़े* रखने दें। ... जैसे लोईस और यूनीके ने किया था है![12]

इस तरह से व्यक्ति विश्वासी होने से फलदायक होने तक बढ़ता है (यूहन्ना 15:8)।

पाठ 3: स्थिर रहने में चुनौतियां (1:8-14)

1:1-7 में पौलुस ने स्थिर रहने के लिए एक शानदार आधार बना था। आयत 8 के आरम्भ से उसने यह स्पष्ट किया कि ऐसे आधार की आवश्यकता *क्यों* है। पौलुस, परमेश्वर की विधियां और परमेश्वर के लोग तस्वीर का केवल एक भाग हैं। मसीही जीवन में बहुत सी बातों से आत्मा खतरे में पड़ सकती है। सच्चाई का प्रचार करने के लिए कई बार पौलुस के जीवन में आने वाली कठिनाइयां आ सकती हैं और विश्वास से फिरने वाले भाइयों के दबाव से भी निराशा हो सकती है। मसीह में आत्मिक तौर पर दृढ़ न रहने वाले किसी भी व्यक्ति को विश्वास से डिगाने के लिए बहुत अधिक दबाव पड़ेगा।

परीक्षाएं जो हमारी स्थिरता को डिगा सकती हैं (आयत 8)

पहली बात, उदाहरण के लिए जो लोग अपने साथ बाहर बाइबल ले जाने से डरते हैं, या जो सच्चाई के पक्ष में, स्टैंड नहीं लेते, उन्हें तीमुथियुस को की गई पौलुस की बिनती पर ध्यान देना चाहिए: *''हमारे प्रभु की गवाही से, ... लज्जित न हो''*[13] (1:8)। यह बिनती व्यावहारिक भी है और वास्तविक परीक्षा भी। इस समस्या पर केवल गंभीरता से लेने वाला ही काबू पा सकता है। हो सकता है कि हम लोगों से (मरकुस 8:38; लूका 9:26), बातों से, सुसमाचार से (रोमियों 1:16), प्रभु की गवाही देने में (2 तीमुथियुस 1:8) या सताए जाने में ''शर्म'' करते हों (2 तीमुथियुस 1:16)।[14] ज़्योंकि हम सबका पिता एक ही है इसलिए हमें साथी मसीहियों को अपने भाई कहने में शर्म नहीं करनी चाहिए (न घमण्डी होना चाहिए) (इब्रानियों 2:11)।

आपकी शर्म का पता लगता है? ज़्या आप वचन का पक्ष लेने से डरते हैं? ज़्या आप मसीह के बारे में दूसरों को बताने से हिचकिचाते हैं? ज़्या आप ''ज़ंजीरों'' से शर्म करते हैं? ज़्या आप भाइयों से कतराते हैं?

दूसरी, पौलुस ने तीमुथियुस से बिनती की, *''इसलिए ... मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो।''* पौलुस तीमुथियुस से एक निर्दोष व्यक्ति का साथ देने के लिए कह रहा था। पौलुस एक विद्रोही भाई के रूप में कैदी नहीं था जो कैद के योग्य हो। उसे यीशु के लिए जीने और उसका प्रतिनिधि होने के कारण कैदी बनाया गया था! बिना किसी लज्जा या पछतावे के पौलुस ने दृढ़ता से ऐलान किया कि वह ''प्रभु का कैदी'' था। मसीह को चेलों द्वारा कैद में छोड़ जाने की तरह ही पौलुस को भी बहुत से भाइयों ने छोड़ दिया था (1:15)। उसने तीमुथियुस से उसे न छोड़ने की बिनती की। ज़्या *आप* जेल में पौलुस से मिलने के लिए जाते?

तीसरी, हमारे सामने एक कैदी से मुलाकात के लिए जाने से भी बड़ी चुनौती है। *मसीही लोगों को* सुसमाचार के लिए अर्थात *''[उसके] साथ दुख उठाने''*[15] *के लिए तैयार*

रहना आवश्यक है। आज हमारे लिए यह दुख उठाना अलग तरह से हो सकता है:

1. भाइयों में झगड़े हो सकते हैं। (उदाहरण के लिए, कुछ लोग पौलुस को नकली प्रेरित कहते थे; प्रेरितों 15; 3 यूहन्ना 9-11)।

2. हमें उन भाइयों की चिंता करनी चाहिए जो दुख उठाते हैं (इब्रानियों 10:32-36; रोमियों 15:1, 2; 2 कुरिन्थियों 11:28)।

3. मुश्किल में पड़े भाइयों को हमारी सहायता की आवश्यकता हो सकती है (इब्रानियों 13:3)।

4. हमें अन्य धर्मों (प्रेरितों 4:5-22; 5:17-42; 18:5-11), सरकारों (प्रेरितों 21:32, 33; 23:10; 28:31; यूहन्ना 8:29-19:30) या दुष्ट लोगों (मत्ती 5:10-12; 2 तीमुथियुस 3:11-13; 4:14) से दण्ड और चुनौतियां मिल सकती हैं।

स्थिर रहने के लिए परीक्षाओं, चरित्र और साहस, दृढ़ता से लगे रहना आवश्यक है। इनके लिए सच्चे मन से विश्वास करना आवश्यक है। *ज़्या आप ऐसी परीक्षाओं के लिए तैयार हैं?* यदि आप इन कठिनाइयों के लिए तैयार हैं तो इब्रानियों 10:32-39 पढ़ें। पौलुस ने इसके बाद सच्ची सेवा के लिए तैयार रहने के लाभ पाने के बारे में बताया।

अपने स्थिर रहने को सुनिश्चित करने के कारण (आयतें 8-10)

परीक्षाओं से आत्मिक रूप में कमज़ोर लोग घबरा सकते हैं। जैसे रोनल्ड वार्ड ने कहा है:

> कुकर्म की ज़ंजीरों में फंसा कलीसिया का अगुआ प्रभु की हत्या जितनी बड़ी रुकावट अर्थात कलंक हो सकता है। दंभ भरा मूर्तिपूजक व्यज़्ति ऐसे प्रभाव वाले समाज के साथ उत्सुकता से संगति नहीं रखेगा जिस कारण कई मसीही लोगों का प्रेम फीका पड़ सकता है (देखिए मत्ती 24:12)। कुछ लोग समझ नहीं पाएंगे और चकित होंगे कि प्रभु ने अपने सेवक को ज़्यों छोड़ दिया है।
>
> पौलुस में ऐसी कोई बात नहीं थी और अर्थ से ही यह बात उस पर लागू नहीं होती। ज़ंजीरों में, वह राजा का कैदी नहीं था। उसने *हमारे प्रभु* और *मुझ से जो उसका कैदी हूं* कहा। वह जेल से भागा नहीं, बल्कि उसने अपने जेलर को मसीही बना दिया। वह प्रभु का कैदी था, जिसे प्रभु के लिए किए जाने वाले काम के कारण और इस कारण कि वह जेल में ज़्या कर सकता है कैद में डाला गया था। ... प्रभु हमेशा अपने सेवकों को ''बचाता'' नहीं है। परन्तु उस अंधकार में जिसे वे सहारते हैं वे जगत में ज्योतियों की नाईं चमक सकते हैं। तीमुथियुस इस प्रकार की भावनाओं से दृढ़ हो सकता था।[16]

उसकी सामर्थ (1:7, 8) ही है *जिससे* लोग सुसमाचार के साथ ऐसी कठिनाई सहने के योग्य होते हैं। पौलुस ने परमेश्वर की सामर्थ से समृद्ध और प्रतिफल देने वाले लाभों को प्रभावशाली ढंग से दिखाया।

परमेश्वर के उपहार पर विचार करें। परमेश्वर ने ''हमारा उद्धार किया''[17] और हमें *पवित्र* बुलाहट[18] से बुलाया है (1:9)।

परमेश्वर के उद्देश्य पर विचार करें! हमारे लिए उसका उद्देश्य हम पर अनुग्रह करना है। उसका उद्देश्य मसीह में है (प्रेरितों 4:12; 1 यूहन्ना 4:14)। मसीही लोगों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य अनादिकाल से ही ठहरा दिया गया था (1 पतरस 1:10-12, 18-21)। कितना शानदार उद्देश्य है! जब हम पाप में *मरे हुए* थे, तो उसने हमें मसीह के साथ *जिलाया* उसमें हमारा सम्बन्ध पृथ्वी पर रहने वाले सबसे महान व्यक्ति (जो अब स्वर्ग में है) से और सबसे बड़ी योजना से होता है, जो कि अनादिकाल से और अनन्तकाल के लिए है! इस संदर्भ में जो कुछ भी पौलुस ने बताया उसका वर्णन इफिसियों 3:1-13 में मिलता है। इस उद्देश्य से जुड़ी महिमा और प्रताप को समझने की कोशिश करते हुए क्या हम इस पर विश्वास कर सकते हैं? इसका प्रणाम आगे है।

मसीह के सबूत पर विचार करें: ''हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु का प्रगट होना'' (1:10)। एक पल के लिए ध्यान दें कि जीवन के मंच पर यीशु के प्रवेश करने और *उसके प्रगट होने* से परमेश्वर के अनन्त नाटक के उस भाग को पूरा करने के कारण कितनी चीज़ें ''होती हैं।'' बार्कले ने इस्राएल के इतिहास में परमेश्वर के हस्तक्षेप करने के दो पलों का हवाला देने के बाद[19] ''प्रगट'' होने के लिए यूनानी शब्द पर ये टिप्पणियां जोड़ीं:

> सो यहूदियों के लिए यह *एपिफेनिया* शब्द परमेश्वर के बचाने वाले हस्तक्षेप का संकेत था।
>
> यूनानियों के लिए यह शब्द एक बड़े शब्द के समान था। सम्राट के गद्दी पर बैठने को *ऐपिफेनिया* (*epiphaneia*) कहा जाता था। यह उसका सार्वजनिक प्रदर्शन होता था। हर सम्राट सिंहासन पर बड़ी-बड़ी आशाएं लेकर आता था; उसके आने को एक नये और बहुमूल्य दिन और बहुत बड़ी आशिषों के आने के रूप में देखा जाता था।
>
> सुसमाचार यीशु के एपिफेनिया (राज्यारोहरण) के साथ भरपूरी से दिखाया गया; और शब्द से ही पता चलता है कि यीशु संसार में परमेश्वर की महान, बचाने वाला हस्तक्षेप और संसार में प्रदर्शन था; और यीशु का आना उस सिंहासन में जो अन्त में परमेश्वर के राज्य का सिंहासन होना था यीशु द्वारा उठाने का आरम्भ था।[20]

यहां पर पौलुस ने मसीह के प्रगट होने की दो प्राप्तियों पर ध्यान दिलाया:

1. शत्रु का नाश कर दिया गया - ''जिसने मृत्यु का नाश किया।'' 1 कुरिन्थियों 15:24-26 पर ध्यान दें। क्योंकि मसीह ही पुनरुत्थान और जीवन है (यूहन्ना 11:25), इसलिए उसने मृत्यु के शत्रु को निकम्मा बना दिया है और मृत्यु को भी विजय में बदल डाला है (1 कुरिन्थियों 15:50-57; फिलिप्पियों 3:7-14; 1:21-23)।

2. प्रकाश होने से अब सुधार होता है: ''जिसने ... जीवन[21] और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।'' यह जीवन हमें मिले इस जीवन से कहीं बेहतर है; जिस शब्द का पौलुस ने इस्तेमाल किया उससे आनन्द और स्वर्ग के आनन्द का सुझाव मिलता है। यह अच्छा जीवन ''अमरता'' वाला जीवन ही है।[22]

मसीह ने हमें सदा तक रहने वाले (यूहन्ना 5:24; 8:51; 2 कुरिन्थियों 4:16-5:1) एक अच्छे और भरपूरी के जीवन के लिए (मत्ती 5:16; यूहन्ना 10:10; 13:17) बुलाया है। ऐसा प्रकाश अब साहस और आत्मविश्वास देता है और रास्ते में और अच्छा होगा (1 पतरस 1:3-9)। जैसे हैंड्रिक्सन लिखता है:

> नि:संदेह यह स्पष्ट है कि यहां और अब विश्वास करने वाले को *सिद्धांत में* यह बड़ी आशीष मिलती है और स्वर्ग में *इससे भी बड़ी* परन्तु जब तक मसीह पुन: प्रगट नहीं हो जाता तब तक वह इसे *पूरी तरह* नहीं पा सकता है। उस दिन के आने तक, सब विश्वासियों के शरीर नाश और मृत्यु के नियमों में ही रहेंगे। पूरी तरह से, *अविनाशी जीवन, न खत्म होने वाला उद्धार* और नये आकाश और नई पृथ्वी में ही मिलने वाला है। यह वह मीरास है जो हमारे लिए रखी गई है।[23]

संक्षेप में, पौलुस तीमुथियुस से कह रहा था, ''लोग प्रभु के लोगों से ज़्या करते हैं तू केवल यही न देख। *यह देख कि प्रभु ने अपने लोगों के लिए ज़्या किया है।* मसीह के प्रगट होने से मिलने वाले लाभों की ओर अपना ध्यान लगा, और *लज्जित न हो। अपना सिर ऊंचा रखते हुए प्रभु के लिए आगे बढ़ता चल!''*

हमारे स्थिर रहने को मज़बूत बनाने के लिए एक उदाहरण (आयतें 11, 12)

पौलुस ने जीवन भर यीशु की तरह एक मापदण्ड ठहराने की इच्छा की (1 कुरिन्थियों 11:1; यूहन्ना 13:3-17; 1 पतरस 2:1-15)। पौलुस द्वारा दिया गया काम तिहरी जिज़्मेदारी थी, जिनमें से हर जिज़्मेदारी अधिकतर लोगों के सामने एक चुनौती होनी थी। पौलुस इन तीनों में एक वीर व सफल सेवक था। वह सेवा करने में स्थिर था ज़्योंकि उसका भरोसा उस पर था जिसने उसे चुना था (गलतियों 1:15, 16; प्रेरितों 9:15, 16)।

निश्चय ही हमें पौलुस के चयन में और उसके द्वारा दी गई जिज़्मेदारी के दृष्टिकोण दोनों में ही पौलुस का चुना जाना महत्वपूर्ण लगता है। पौलुस ने लिखा: ''मैं ... ठहरा''[24] (1:11)। परमेश्वर जानता था कि पौलुस ज़्या कर सकता है। इसलिए उसने उसे एक ''प्रचारक'' ठहराया।[25] बार्कले ने अवलोकन किया:

> यूनानी भाषा में *kerux* [प्रचारक] एक व्यापक अर्थ वाला शज़्द है। इसके अर्थ की तीन मुज़्य बातें हैं और उनमें से हर एक में हमारे मसीही दायित्व का सुझाव मिलता है। *कैरज़्स* उस संदेशवाहक को कहा जाता था जो राजा की ओर से घोषणा - पत्र लाता था। कैरज़्स एक दूसरे के आमने - सामने खड़े दो शत्रुओं के दूत को भी कहा जाता था, जो सुलह और शांति के लिए शर्तें या बिनती लेकर आता था। कैरज़्स किसी नीलामकर्ज़ा या व्यापारी द्वारा खरीदने का लोगों को निमन्त्रण देने के लिए नियुज़्त किया गया व्यज़्ति होता था। सो मसीही व्यज़्ति

> अवश्य ही वह आदमी है जो अपने साथी तक संदेश लाता है; उसे परमेश्वर के साथ सुलह और शांति का संदेश मनुष्यों तक लेकर जाना आवश्यक है; उसके लिए वह व्यक्ति होना आवश्यक है जो अपने साथियों को उनके लिए परमेश्वर की उस बड़ी पेशकश को स्वीकार करने के लिए कहता है।[26]

दूसरा, पौलुस एक ''प्रेरित'' ठहराया गया था।[27] ''apostolos [अपोस्टल] अपने लिए नहीं बोलता; वह उसके लिए बोलता था जिसने उसे भेजा होता था। *अपोस्टोलोस* अपने ही अधिकार से नहीं आता था; वह उसके अधिकार से आता था जिसने उसे भेजा होता था।''[28] मसीह द्वारा भेजा होने के कारण वह अधिकार कितना उज़म है जो पौलुस को और दूसरे प्रेरितों को मिला (मत्ती 28:18-20; लूका 10:16; इफिसियों 2:19-3:5)!

तीसरा, पौलुस को एक ''उपदेशक'' ठहराया गया था।[29]

> उपदेशक मसीह के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है: लोगों से बिनती करना, परमेश्वर के प्रेम का संदेश लेकर लोगों के पास आना सुसमाचार प्रचारक को दिया गया काम है। स्पष्ट भाव के क्षण में, ... व्यक्ति उन बुलाहटों को स्वीकार कर सकता है; परन्तु रास्ता अभी बहुत लज़्बा है। उसे इसका अर्थ समझना आवश्यक है अर्थात उसे मसीही जीवन के अनुशासन को सीखना होगा। बीज तो रोप दिया गया है; परन्तु उसके बढ़ने की लज़्बी और धीमी प्रक्रिया अभी बाकी है। नींव तो डाल दी गई है, परन्तु मसीही जीवन की दीवार खड़ी होनी अभी बाकी है। सुसमाचार प्रचार की ज्वाला मसीही शिक्षा के लगातार देने से प्रज्वलित हो सकती है।[30]

इस प्रकार परिभाषा से ''प्रचारक'' लोगों का ध्यान खींचने वाला है, ''प्रेरित'' अधिकार के साथ मनुष्य जाति के लिए स्वर्ग का संदेश लाता है, और ''उपदेशक'' उनकी उन्नति के लिए विशेष बातें बताता है। पौलुस ने इन सभी महत्वपूर्ण सेवाओं में काम किया। पौलुस को ये तीनों विशेष काम सौंपे गए थे, परन्तु सुसमाचार के लिए प्रचारक होना और उपदेशक के दो काम करने आवश्यक हैं (देखिए 2 तीमुथियुस 4:1-5; 2:2; तीतुस 1:5; 2:15)।

पौलुस दुख उठाने वाला सेवक था (1:12)। वह किसी हीन भावना के कारण ''दण्ड पाने का भूखा नहीं था।'' बल्कि उसने पतरस और मसीह की तरह सेवा की (1 पतरस 3:15-18)। उसकी भूमिका न गैर जिज़्मेदारी की थी और न अनिवार्य (देखिए 2 कुरिन्थियों 4:16-5:10)। पौलुस जानता था कि उसके दुख उठाने का कोई ''कारण'' था।[31] संदर्भ से इस बात की पुष्टि होती है कि पौलुस अपने दुख उठाने को न्यायसंगत मानता था। वह जानता था कि यदि कलीसिया को बढ़ाना और सुसमाचार को सारी सृष्टि में पहुंचाना है तो यह वह मार्ग है जिसमें से गुजरना ही पड़ेगा (देखिए कुलुस्सियों 1:23-29)।

इस ''कारण'' के लिए दुख उठाने पर, पौलुस ने लिखा कि ''मैं लजाता नहीं।'' एक बार फिर हमारा सामना दुख और लज्जा से होता है (देखिए आयत 8)। दुख और लज्जा इकट्ठे आ सकते हैं, परन्तु जब वे मसीह के काम के लिए थे तो पौलुस उनसे न लजाया। ज़्या आप मसीह के उद्देश्य के लिए परीक्षा में पड़ने पर कभी लजाए या चुप रहे हैं?

पाद टिप्पणी 33 में ''लजाना'' के लिए परिभाषा पवित्र शास्त्र में तीन उन क्षेत्रों का उल्लेख करती है जिनमें हम (1) किसी भाई या बहन से, (2) वचन अर्थात सुसमाचार से, (3) प्रभु की गवाही से या उसके लिए, (4) मसीहियत द्वारा हमारे लिए ठहराए जीवन के ढंग से (देखिए इब्रानियों 10:32-36) लज्जित हो सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों को सह लेने वाले मसीहियों को ''जनाने'' नहीं कहा जा सकता। ये चुनौतियां वास्तविक हैं और कमज़ोर दिल वाले इन्हें सहार नहीं सकते (देखिए 1 कुरिन्थियों 16:13, 14; इफिसियों 6:10-18)।

पौलुस द्वारा लज्जा को स्वीकार करने की बात पूरी तरह से न्यायसंगत थी जिसका कारण परमेश्वर में भरोसा था!

हमारे स्थिर रहने को उत्साहित करने का स्रोत (आयत 12)

पौलुस की गवाही यह कहते हुए जारी रही कि, ''इस कारण मैं इन दुखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं, ज़्योंकि मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है'' (1:12)।

परमेश्वर के प्रति समर्पण अनजाने में नहीं होता है। पौलुस ने लिखा है, ''मैं उसे जानता हूं।''[32] ज्ञान या जानने पर ज़ोर देने के लिए इस यूनानी शज़्द से ठोस शज़्द नहीं है! पौलुस ने प्रभु को जानने (और भरोसा रखने) के तीन चरणों के बारे में समझाया:

1. ''मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है, जानता हूं।''[33] पौलुस का जीवन इस तथ्य का कि बाइबल का विश्वास अर्थात परमेश्वर की ओर से स्वीकृत विश्वास न केवल मसीह में भरोसा है बल्कि आज्ञाकारिता से भी जुड़ा है, एक सजीव प्रदर्शन था; पौलुस के भरोसे से इसे कष्ट के साथ जोड़ने का अर्थ आज्ञा मानना भी था (देखिए फिलिप्पियों 3:7-11)। जितना अधिक विश्वास होगा परमेश्वर और सच्चाई के प्रति उतनी ही आस्था होगी।

2. ''मुझे निश्चय है।'' 1:5 में की गई चर्चा पर विचार करें जिसमें पौलुस ने तीमुथियुस के निष्कपट विश्वास में अपने पूर्ण भरोसे से मिलते जुलते वाज़्यांश का इस्तेमाल किया। यहां पर पौलुस अपने ही विश्वास की चमक को तीमुथियुस पर ज़ोर दे रहा प्रतीत होता है।

3. मसीह में भरोसे के कारण ही पौलुस को अपने उद्धारकर्ज़ा को कुछ ''देना'' पड़ा। मूल भाषा यूनानी में कहा गया है कि प्रभु ''मेरी अमानत की रखवाली करने'' में सक्षम है। इस अभिव्यज़्ति से सज़्बन्धित विचारों को रोनल्ड वार्ड द्वारा अच्छे ढंग से संक्षिप्त किया गया है:

> *कुछ विद्वान इस अमानत को सुसमाचार के रूप में मानते हैं (तु. आयत 14) ... दूसरे इसे स्वयं पौलुस का अपने प्राण के लिए एक संकेत मानते हैं।* प्राण वाला विचार अन्त के दिन के विचार और विश्वास या भरोसे के विचार से अधिक मेल खाता लगता है, विशेषतया यदि विश्वास का अर्थ मसीह में भरोसा रखना है। ''अमानत'' और ''विश्वास'' का सज़्बन्ध 1 पतरस 4:19 में देखा जा सकता है, ''... वे भलाई करते हुए, अपने - अपने प्राण को विश्वास योग्य (भरोसेयोग्य) सृजनहार के हाथ में सौंप दें।'' पौलुस ने स्वयं प्रेरितों 20:32 में उसी क्रिया का

इस्तेमाल किया (जो कि संज्ञा रूप ''थाती'' से मिलता-जुलता है), मूलत: ''अब मैं तुझ्हें परमेश्वर के पास रखता हूं। ...'' बैंगल ने इस विषय पर ठीक ही निष्कर्ष निकाला था: ''विदाई के समय पौलुस के पास दो ही अमानतें थीं, उनमें से एक तो प्रभु के लिए थी और दूसरी तीमुथियुस के लिए।'' इस कारण दुख सहने वाले प्रेरित के लिए कोई लज्जा नहीं हुई और विश्वास का अर्थ ही सुनिश्चित हुआ। ध्यान दें कि पौलुस अपनी जेल में से विचार करते हुए आयत 8 में ''लज्जित न तो'' से शुरू करता है, परन्तु आयत 9 में वह परमेश्वर की सामर्थ व अनुग्रह पर विचार करते हुए भाग पड़ता है, और शीघ्र ही उकाबों की तरह पहाड़ों पर चढ़ जाता है (तु. यशा. 40:31)। ऐसी प्रेरणा से उसे लज्जा का कोई नाम नहीं था। तीमुथियुस के लिए भी ऐसा ही होगा।[34]

अभी - अभी पौलुस ने घोषणा की थी कि मसीह ने अमरता को प्रकाशमान कर दिया है (1:10)। आत्मविश्वास के साथ वह इस बात की पुष्टि कर रहा था कि, ''मैं उसे जानता हूं। मैंने उस पर विश्वास किया है। मुझे पूरा भरोसा है। इसलिए मैंने अपने आप को उसके काम के सामने सपुर्द कर दिया है।'' मृत्यु के निकट कैद से ऐसी ठोस टिप्पणियां हमें स्थिर रहने के लिए जोश दिलाने वाली होनी चाहिए।

अपने स्थिर रहने का सार प्रस्तुत करने की आज्ञा (आयतें 13, 14)

पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दिए गए आदेश और ज़ोर से स्पष्ट है कि उसे प्रेरिताई का अधिकार मिला था। उसने कहा, ''जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उन को उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी थाती की रखवाली कर'' (1:13, 14)।

इस आदेश का पहला भाग है ''लगा रह।'' उसने कहा, ''खरी बातों को अपना आदर्श बनाकर रख।''[35] जिस बात को पौलुस दृढ़तापूर्वक कह रहा था वह एक ''अनिवार्यता है।'' पौलुस केवल तीमुथियुस (या किसी भी सुसमाचार प्रचारक) को ही ज़ोर नहीं दे रहा था बल्कि उसने आगे और स्पष्ट किया कि तीमुथियुस को उसकी आज्ञा कैसे माननी चाहिए:

विश्वास में - उस आज्ञा को मानने की सामर्थ (1 यू. 5:4)
प्रेम में - वह मन जिसमें उस आज्ञा को पूरा किया जाना था (1 कुरिं. 13:4-8)
मसीह में - जो उस आज्ञा का स्रोत है (फिलि. 4:13; रोमि. 8:35-39)

आज्ञा का दूसरा भाग *स्रोत को रखना है जो उस दौड़ का संचालन करता है* (1:14)।

पौलुस ने ''अमानत'' के लिए यूनानी शज़्द का इस्तेमाल किया, इस बार उसने इसे ''थाती'' कहा।[36] यहां पर वह एक सिपाही की तरह लगा जो तीमुथियुस को उसे (और हमें) सौंपे गए धन की ''रखवाली'' करने के लिए सावधान रहने की आज्ञा दे रहा था।[37] यह रखवाली

''पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है'' होती है। हैंड्रिक्सन ने यह व्याख्या दी:

> तीमुथियुस से इस धरोहर की हर समय रखवाली करने का आग्रह किया गया है। उसे हर आक्रमण से इसे बचाना चाहिए और इसमें थोड़े से भी परिवर्तन या सुधार की अनुमति नहीं देनी चाहिए।
>
> परन्तु ज्योंकि शत्रु ताकतवर है और तीमुथियुस कमज़ोर, इसलिए पौलुस ने बड़ी समझदारी से यह विचार जोड़ा कि यह रखवाली किए बिना ''पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में'' अर्थात पौलुस में, तीमुथियुस में और विश्वास करने वाले सब लोगों में ''बसा हुआ है'' नहीं हो सकता (रोमियों 8:11)।[38]

आत्मा की शिक्षाओं अर्थात वचन की बात को मानकर, हम उस आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है उस धन की रखवाली कर रहे हैं। आत्मा के वास का इन्कार करने का अर्थ मसीही व्यक्ति के सच्चाई की रक्षा करने के साधनों को निकालना है। शैतान तो चाहेगा कि हम उन साधनों का इन्कार करें जिनके द्वारा हम उस आदेश के प्रति विश्वासयोग्य रह सकते हैं और जिनके द्वारा सच्चाई पवित्रता और सामर्थ के साथ हमें सौंपी गई है। परमेश्वर का वचन तो बना रहेगा, चाहे आकाश और पृथ्वी टल ही जाएं (मत्ती 24:35)। परन्तु, उसके बहुमूल्य वचन मिट्टी के बर्तनों में रखे गए हैं (2 कुरिन्थियों 4:2-6), और हम पर उस अमानत की जो पौलुस ने हमें सौंपी है रखवाली करने की जिम्मेदारी है।

पाठ 4: स्थिर रहने से जुड़ी एक पसन्द (1:15-18)

तीमुथियुस को पौलुस द्वारा चेतावनी दी गई थी कि वह अपने सामने एक पसन्द रखे। मसीहियत सपाट, समतल खेत नहीं, बल्कि एक ढलानदार मैदान है। हम या तो इस अवसर को बहुमूल्य समझकर ऊपर की ओर चढ़ सकते हैं या दण्ड पाने के लिए वापस नीचे की ओर गिर सकते हैं (देखिए इफिसियों 5:15-17)।

विश्वासहीन अनुयायी (आयत 15)

आयत 15 चौड़े मार्ग की तस्वीर दिखाने वाली होनी चाहिए जिसके बारे में मत्ती 7:13, 14 में यीशु ने बताया था। पौलुस ने कहा, ''तू जानता है, कि आसिया वाले *सब* मुझसे *फिर गए हैं*[39] ...'' उनमें से दो का नाम फूगिलुस और हिरमुगिनेस बताया गया है। नये नियम में उनके नाम का उल्लेख केवल यहीं मिलता है। प्रेरितों की शिक्षा को छोड़ देने वाले लोग उन्हीं की विरासत हैं। इस प्रकार वे यहूदा इस्करियोती के पीछे खड़े हो जाते हैं जिन्होंने शुरुआत तो की परन्तु रास्ते में ठोकर खाकर अपने ही नाश के लिए दूसरों को निराश करते हैं!

विश्वासी रहने वाला अनुयायी (आयतें 16-18)

उनेसिफुरुस परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य व्यक्ति था।[40] पौलुस ने यह निष्कर्ष निकाला ज़्योंकि उनेसिफुरुस ने अपना चाल चलन इस प्रकार दिखाया था।

पहली बात, उसने पौलुस के जी को ''बहुत बार ठण्डा किया'' था (1:16)। पौलुस की परिस्थिति के कारण निश्चित रूप से मसीही लोगों की संगति उससे छूट गई थी। उनेसिफुरुस के प्रोत्साहन से उसका जी कुछ ठण्डा हुआ था।

दूसरा, वह पौलुस की ''ज़ंजीरों से लज्जित न हुआ'' था (देखिए 1:8, 12)। उनेसिफुरुस ने उसी विश्वास को दिखाया था जो पौलुस तीमुथियुस से दिखाने की बिनती कर रहा था।

तीसरा, उसने ''यत्न से ढूंढ़कर'' पौलुस से भेंट की (1:17)। उनेसिफुरुस ने उन्हीं स्थितियों की खोज की जिनके कारण बहुत से लोग पौलुस को छोड़ गए थे। वह पौलुस से मिलना चाहता था। उस पर ''दुखी आदमी द्वारा संगति ढूंढ़ने'' की बात नहीं बल्कि किसी दुखी का दुख बंटाकर उसे ताजगी देने की बात लागू होती थी!

चौथा, उसने पौलुस को ''ढूंढ़ा।'' यदि पिछले वाक्य से तीव्र इच्छा का पता चलता है तो इससे बड़े हठ का। उसने तब तक सांस नहीं ली जब तक पौलुस मिल नहीं गया! यह एक अच्छे चरवाहे की तरह है जो तब तक ढूंढ़ता रहता है जब तक ''खोई हुई भेड़ मिल न जाए'' (लूका 15:4)।

पांचवां, वह निरन्तर लगा रहा। रोम में और इफिसुस में भी उनेसिफुरुस ने पौलुस की सेवा की[41] (1:18)।

उनेसिफुरुस तीमुथियुस और हमारे लिए स्थिर रहने का एक बड़ा प्रदर्शन है। दूसरों की सेवा करने के लिए जाते समय उनेसिफुरुस खाली हाथ नहीं गया।

उनेसिफुरुस के गुणों में से कितने गुण आपके व्यवहार में पाए जाते हैं?

पौलुस ने तीमुथियुस को सताव सहते हुए भी विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने तीमुथियुस को विश्वासी रहने की रुकावटों के बारे में चौकस तो किया पर उसे उन आशिषों का स्मरण कराया जो स्थिर रहने वालों के लिए हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]पुस्तक के आरम्भ में नये नियम में प्रेरितों के तीन वर्गों के सम्बन्ध में 1 तीमुथियुस 1:1 पर टिप्पणियां देखिए। [2]पौलुस का विद्रोह (तरसुस के शाऊल के रूप में; देखिए प्रेरितों 7:58-8:1; 9:1, 2; 26:9-11) केल्विनवादी शिक्षा के विरुद्ध एक उत्कृष्ट तर्क है। पौलुस के लिए परमेश्वर की योजना उसके जन्म से तो थी, परन्तु पौलुस का विद्रोह और मसीही लोगों की हत्या निश्चित रूप से पुकार - पुकार कर कहती है कि परमेश्वर के लोगों और उसकी योजना के विरुद्ध उसकी अपनी इच्छा थी और उसने उस इच्छा के अनुसार काम किया। हम कितने कृतज्ञ हो सकते हैं कि परमेश्वर ने शाऊल को जो सताने वाला था, मन फिराने और पौलुस बनने का अवसर दिया जिससे वह ''परमेश्वर की इच्छा से'' मसीह का धर्मी प्रेरित बन गया! [3]विलियम हैंड्रिक्सन ने कहा, ''पौलुस अपना पत्र 'प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम' लिख रहा है। (तु. 2 तीमु. 2:1; 3:14)। जैसे ... एक

बच्चे को प्राकृतिक जीवन उसके सांसारिक पिता से मिलता है वैसे ही तीमुथियुस को आत्मिक जीवन पौलुस से मिला था। इसके अलावा, जैसे कोई बच्चा अपने पिता (के साथ) की सेवा करता है वैसे ही तीमुथियुस ने सुसमाचार में पौलुस (के साथ) की सेवा की।... इसके अतिरिज्त उसके होंठों पर जो मृत्यु का सामना कर रहा है प्रिय का शज़्द स्वाभाविक है, ... अपने पूरे अतीत को उस अति प्रिय जवान मित्र और सहायक के साथ सज़्बन्ध को याद करता है जिसका जीवन उसके साथ कई तरह से जुड़ा हुआ था'' (*ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* [लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964], 224)। [4]प्रार्थनाएं, बिनतियां (यू.: *deesis*) - ''... आवश्यकता, निर्धनता ... चेष्टा, मांग, विनय, मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के पास की गई बिनतियां ... याकूब 5:16; 1 पत. 3:12 ... प्रेरितों 1:14; 1 तीमु. 2:1 ... '' अलग - अलग यूनानी शज़्दों से हमारी बिनतियों का ढंग स्पष्ट होता है: ''... *deesis* निजी आवश्यकता की अभिव्यज़्ति को, *proseuche* समर्पण को; *enteuxis* बच्चों के आत्मविश्वास को जिसमें प्रार्थना को परमेश्वर के साथ मन से की गई बातचीत के रूप में दिखाया जाता है'' महत्व देता है (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड, टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 126)। [5]भर (यू.: *plerotho*) - ''भरना, ... भरपूर करना, उदारता से देना ... किसी के मन से मिलाना ... रोमि. 15:13 ... सज़्पूर्ण होना, पूर्ण कुशल होना'' (थेयर, 517-18)। तथ्य यह है कि अनिश्चित भूतकाल और संशय आदि सूचक क्रिया रूप दोनों का अर्थ होगा कि पौलुस को तीमुथियुस के मिलने से पहले ऐसा आनन्द नहीं मिलता था। [6]रोनल्ड ए. वार्ड, *कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (वैको, टैज़्स.: वर्ड बुज़्स, 1974), 143. [7]निष्कपट विश्वास (यू.: *anupokritos*) - ''बिना कपट के'' होना ''रोमि. 12:9; 2 कुरिं. 6:6; 1 तीमु. 1:5; 2 तीमु. 1:5; याकूब 3:17; 1 पत. 1:22'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1850], 65)। विश्वास के अन्य दर्जे यूहन्ना 12:42, 43; याकूब 2:17; मज़ी 6:30; 8:10, 26; 15:28; 17:20; मरकुस 11:22-24; प्रेरितों 5:6, 7; 11:24; रोमियों 10:17; 12:3; इब्रानियों 10:22 में मिलते हैं। [8]''इसलिए यह लगेगा कि पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के समय ही कहीं नानी लोईस (जो शायद अपनी बेटी के पास रह रही थी) और मां यूनीके का बपतिस्मा हुआ था, जिससे उन्होंने मसीह में प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देखा और उसमें भरोसा किया था; और इस कारण ये दोनों महिलाएं पौलुस के साथ अनुग्रह के इस महिमामय काम में सहयोग देती थीं जिस कारण तीमुथियुस का भी मन परिवर्तन हो गया'' (हैंड्रिज़्सन, 228)। लोईस, यूनीके और तीमुथियुस के बारे में पौलुस की टिप्पणियों से परिवार के लिए सीखे जाने वाले सबकों के लिए 1 तीमुथियुस पर प्रारज़्भिक नोट्स देखिए। [9]निश्चय (यू.: *peitho*) - ''भरोसा रखना, ... आश्वस्त होना'' (थेयर, 497)। पूर्णकाल यह संकेत देता है कि उनके विश्वास की बात स्थिर हो चुकी है अर्थात पूरी हो चुकी है। प्रमाण है और यह पौलुस पर एक आत्मविश्वास के साथ अर्थात सिद्ध भरोसे के साथ आया। [10]सामर्थ (यू.: *dunamis*) - ''किसी वस्तु में उसकी प्रकृति के गुण से पाई जाने वाली सामर्थ ... *dunamis tou theou* का इस्तेमाल ईश्वरीय सामर्थ के लिए होता है जिसे मनुष्य के मन पर कार्य करने वाले के रूप में माना जाता है, ... 2 तीमु. 1:8; 1 पत. 1:5, ...'' (थेयर, 159)।

[11]विलियम बार्कले ने इस शज़्द ''संयम'' से जुड़े शज़्द का अवलोकन किया है: ''वह शज़्द है *sophronismos.* तीन बड़े यूनानी शज़्द हैं जिनका अनुवाद नहीं किया जा सकता। किसी ने इसकी परिभाषा 'सन्तत्व का विवेक' के रूप में की है। [सर रॉबर्ट] फाल्कोनर इसकी परिभाषा 'आतंक या पीड़ा के समय अपने आप पर नियन्त्रण' के रूप में करते हैं। केवल मसीही ही है जो हमें अपने ऊपर काबू पाने, स्व अनुशासन, अपने आप पर नियन्त्रण रखने की सामर्थ दे सकता है जिससे हम बह जाने से और भाग जाने से बचे रहते हैं।... सोफरोनिस्मोस अपने आप पर नियन्त्रण रखने के लिए दी गई वह ईश्वरीय चीज़ है जो किसी मनुष्य को दूसरों पर एक महान शासक बनाता है ज़्योंकि पहले वह मसीह का सेवक और अपने आप का स्वामी बनता है।'' (*द लैटर्स टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क. [फिलाडेल्फिया, वैस्टमिंस्टर प्रैस, 1960], 166)। [12]हैंड्रिज़्सन, 230. [13]लज्जित (यू.: epaischunthe) - क्रिया रूप ऐलान करता है कि तीमुथियुस का ''लज्जित न होना'' पूरी तरह से समझ नहीं आता। जब यीशु के क्रूस पर चढ़ने का

समय निकट आया था, *तो सब* प्रेरित लज्जित हुए थे। कर्मवाच्य दिलचस्प है, ज़्योंकि इसके द्वारा पौलुस तीमुथियुस को चेतावनी दे रहा है कि तीमुथियुस का लज्जित होना किसी दूसरे के बहकावे से हो सकता है (देखिए आयत 7)। उसे चाहिए कि वह ईश्वरीय प्रभाव को अपने आप को सामर्थ दे जिससे वह लज्जित न हो (देखिए 2:1; 4:17, 18)। [14]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़ अर्ड्ट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957), 281. [15]दुख उठाना (यू.: sugkakopatheson) - आदेशसूचक बिनती और आज्ञा को मिला रहा है। इस नाज़ुक घड़ी पर जब इतनी उलझन है और बहुत से भाई डोल रहे थे, पौलुस ने तीमुथियुस के लिए आदेशसूचक पुकार की कि वह दुख सहे। मूल शब्द का अर्थ है ''... किसी से भी बुराई को सहना, से कष्ट सहना ... 2 तीमु. 1:8 ... सुसमाचार के लिए दूसरों के साथ कष्ट सहना'' (रोबिन्सन, 682)। [16]वार्ड, 149. [17]अल्फ्रेड मार्शल, *the R.S.V. इन्टरलीनियर ग्रीक इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1970), 835. [18]पवित्र (यू.: *hagios*) - ''परमेश्वर को समर्पित होना, पवित्र ... परमेश्वर और उसकी सेवा के लिए अलग किया ... मज़ी 4:5; 27:53; प्रकाशित. 11:2 ... ज़्योंकि मसीही लोगों को 'पवित्र लोग' कहा गया है ... इसलिए उनका *klesis* [बुलाया जाना] भी *हेगियोस* है, ...'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 9)। देखिए मज़ी 5:48. [19]2 मक़्काबियों 3:24-30; 15:22-27. 100 ई.पू. के लगभग लिखी मक़्काबियों की दो अप्रामाणिक पुस्तकों में ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है जो पुराने और नये नियम के अन्तराल में घटीं। दोनों पुस्तकें 166-400 ई.पू. में पलिश्तीन में यहूदियों पर दबाव के प्रयास और स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष पर केन्द्रित हैं। [20]बार्कले, 172-73.

[21]जीवन (यू.: *zoe*) - ''... जीवित होना ... जीने का ढंग ... सुसमाचार के अर्थ में, अनन्त जीवन, उद्धार ... परमेश्वर के राज्य में आनन्द और महिमा ... मज़ी 19:16, 17; यूहन्ना 3:15, 16; 5:24 ... 2 तीमु. 1:1 ...'' (रोबिन्सन, 319-20)। [22]अमरता (यू.: *aphtharsia*) - ''अनश्वरता, नाश होने से बचाव; जैसे पुनरुत्थान के बाद पवित्र लोगों की देहें ... 1 कुरिं. 15:42, 50, 53-54 ... स्वर्ग में आने वाले जीवन और पवित्र लोगों का आनन्द, रोमि. 2:7; 2 तीमु. 1:10'' (रोबिन्सन, 111)। [23]हैंड्रिक्सन, 234. [24]ठहरा (यू.: *etethe*) - आदेशसूचक एक और स्पष्ट वाक्य है कि व्यक्तित्व (सेवा का क्षेत्र) पौलुस ने किसी दूसरे स्रोत से पाया था न कि अपनी ही संकल्पशक्ति से (1 तीमुथियुस 1:12 पर नोट्स देखिए)। मूल शब्द *tithemi* का अर्थ है ''... रखना, ... ठहराना ... स्थापित करना ... किसी वस्तु या व्यक्ति को बनाना। ... 1 तीमु. 2:7; 2 तीमु. 1:11'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 823-24)। [25]प्रचारक (यू.: *kerux*) - ''संदेशवाहक, जिसका कर्त्तव्य सार्वजनिक तौर पर घोषणा करना है ... जो ऐलान करता है'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 432); ''... नूह, 2 पत. 2:5; ... पौलुस, 1 तीमु. 2:7; 2 तीमु. 1:11 की तरह लोगों को उपदेश देने वाला, उदाहरण के लिए ईश्वरीय इच्छा और विधियों का प्रचारक'' (रोबिन्सन, 398); ''... सरकारी अधिकार प्राप्त संदेश देने वाला, जो राजाओं, न्यायाधीशों, राजकुमारों, सेनापतियों के आधिकारिक संदेश ले जाने वाला या जो सरकारी सज़्मन आदि देता था। ... परमेश्वर का राजदूत और ईश्वरीय वचन का संदेशवाहक या सुनाने वाला'' (थेयर, 346)। [26]बार्कले, 170. [27]प्रेरित (यू.: *apostolos*) - ''प्रतिनिधि, संदेशवाहक, आदेश देकर भेजा हुआ'' (थेयर, 68)। [28]बार्कले, 171. [29]उपदेशक (यू.: *didaskalos*) - ''... जो परमेश्वर की बातों और मनुष्य के कर्त्तव्यों की शिक्षा देता है ...'' (थेयर, 144)। [30]बार्कले, 171.

[31]कारण (यू.: *aitia*) - समानार्थक शब्द *elegchos* का अर्थ है ''आदेश, नैतिक और या न्यायिक, जो सबित हो चुका है'' (जी. ऐज़्बट स्मिथ, *ए मैनुएल ग्रीक लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड, टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1948], 14)। [32]जानता (यू.: *oida or eido*) - ''के साथ, निजी सज़्बन्ध और सज़्पर्क होना ...।'' (रोबिन्सन, 209-10)। [33]प्रतीति (यू.: *pepisteuka*) - पूर्णकालिक ऐलान करता है कि यह एक तैयार माल या पौलुस के मन का तथ्य है, और निश्चयार्थक यह ऐलान करता है कि यह एक वर्तमान या निरन्तर चलने वाला विश्वास है। थेयर ने मूल शब्द *pisteuo* की परिभाषा यह दी: ''... को मान लेना; श्रेय देना, ... यीशु या परमेश्वर में कुछ पाने या करने के योग्य होने के लिए भरोसा करना ... में विश्वास रखना: मज़ी 8:13; 21:22 ... विशेषकर उस विश्वास के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द

जिससे कोई मनुष्य यीशु को ग्रहण करता है, अर्थात दिल से मानकर, आनन्दपूर्वक भरोसा करता है कि यीशु ही मसीहा अर्थात परमेश्वर के राज्य में अनन्त उद्धार दिलाने के लिए परमेश्वर की ओर से ठहराया गया है, जिस कारण मसीह की आज्ञा मानना आवश्यक है ... प्रेरितों 8:37 ... 1 तीमु. 3:16 ... 1:16; 1 पत. 2:6 ... मसीह [परमेश्वर] में भरोसा रखना, 2 तीमु. 1:12'' (थेयर, 511-12)। [34]वार्ड, 155-56. [35]यूनानी शज्द (*hupotuposin eche hugiainonton logon*) और भी चुनौती भरा है। मूलत: इसका अर्थ है, ''स्वस्थ बातों का नमूना रख'' (हैंड्रिज़्सन, 237)। *eche* वर्तमान, आदेशसूचक, मध्यम पुरुष एकवचन है। [36]थाती (यू.: *ten kalen paratheken;* देखिए आयत 12, निस्संदेह यहां सुसमाचार की ही बात है) - paratheke का अर्थ है ''... जमा की हुई चीज, अमानत, ... धरोहर ... सुसमाचार के सही ज्ञान और शुद्ध शिक्षा के लिए, दृढ़ता और विश्वास से थामे रखने, और दूसरों को बड़ी सावधानी से सौंपते हुए इस्तेमाल किया जा सकता है: 2 तीमु. 1:12 ... 1 तीमु. 6:20 और 2 तीमु. 1:14'' (थेयर, 482)। [37]रखवाली (यू.: *phulasso*) - यह कोई विकल्प नहीं है। तीमुथियुस के लिए इस वचन की शर्तों को पूरा करने के लिए तैयार रहना आवश्यक है। 1 तीमुथियुस 6:3-21 वाले पाठ में पाद टिप्पणी 37 में इसकी परिभाषा देखें। [38]हैंड्रिज़्सन, 237. [39]फिरना (यू.: *apestraphesan*) - ''निष्ठा किसी दूसरे की ओर करना, कर्ज़व्य त्याग का प्रलोभन ... पीछा करना, मुड़ जाना ... तीतु. 1:14'' (थेयर, 68)। कर्मवाच्य संकेत देता है कि वे किसी बाहरी शज्ति के प्रति समर्पण करके ''फिर गए'' थे। [40]अनुग्रह (यू.: *eleos*) - ''किसी दुखी या पीड़ित की उसे राहत दिलाने की इच्छा से भलाई या दया करना ... मसीह के द्वारा परमेश्वर का मनुष्य के उद्धार उपलज़्ध कराने और देने में परमेश्वर का अनुग्रह और दया: लूका 1:54; रोमि. 15:9; इफि. 2:4 ... 2 तीमु. 1:16, 18'' (थेयर, 203)।

[41]सेवा करना (यू.: *diakoneo*) - ''बाट जोहना या सेवा करना ... किसी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना, उदाहरण के लिए भोजन, कपड़े; ... किसी की भी कैसे भी, सेवा करना ... उपलज़्ध कराना ... आवंटन करना ... ईश्वरीय संदेश देना ...'' (रोबिन्सन, 170-71)।